राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की संचार प्रणाली का विश्लेषणात्मक अध्ययन

(नागपुर मुख्यालय के विशेष संदर्भ में)

AN ANALYTICAL STUDY OF THE COMMUNICATION SYSTEM OF R.S.S.

(IN SPECIAL REFERENCE TO NAGPUR H.Q.)

एम.फिल. उपाधि हेतु प्रस्तुत लघु शोध प्रबंध

सत्र- 2014-15

शोधार्थी

बिमलेश कुमार

एम.फिल. जनसंचार

सत्र- 2014-15

पंजीकरण संख्या– 2014/05/208/018

संचार एवं मीडिया अध्ययन केंद्र

(मानविकी एवं सामाजिक विज्ञान विद्यापीठ)

महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय

(संसद द्वारा पारित अधिनियम 1997 क्रमांक 3 के अंतर्गत स्थापित)

पोस्ट : हिंदी विश्वविद्यालय, गांधी हिल्स, वर्धा – 442005 (महाराष्ट्र) भारत

अध्याय-1

1.1 प्रस्तावना

वर्तमान समय में हम सूचना क्रांति के दौर में जी रहे हैं। सूचना हमारी मूलभूत आवश्यकता बन गयी है। सूचना के प्रवाह में माध्यम की प्रमुख भूमिका होती है। माध्यम के बगैर सूचना की हम कल्पना भी नहीं कर सकते हैं। माध्यम सूचना को निश्चित समूह तक पहुंचाता है। बेहतर एवं विश्वसनीय माध्यम संचार को मूल स्वरूप प्रदान करता है। साथ ही उसकी प्रसांगिकता को लक्षितजन तक सही रुप में पहुँचाता है। प्रचीन काल से ही संचार माध्यमों का उपयोग होता रहा है। समय बदला और संचार के माध्यमों में भी बदलाव होते गयें। प्रचीन काल में संचार हेतु लोक माध्यमों का उपयोग होता था, फिर प्रिन्ट माध्यम का उपयोग होने लगा, सूचना को सुलभ तरीके से पहुँचाने के लिए इलेक्ट्रॉनिक माध्यम का उपयोग होने लगा। फिर समय की बचत और त्वरित फीडबैक के लिए वेब मीडिया का उपयोग होने लगा। मनुष्य ने अपनी आवश्यकता के अनुरुप संचार माध्यमों का अविष्कार कर संचार की गति को आगे बढ़ाया। आधुनिक दौर में संचार की गति तीव्र हो गई है। सूचना क्रांति के इस युग में सभी संगठनों के बेहतर संचालन एवं लक्ष्य की प्राप्ति में संचार माध्यमों का समुचित उपयोग आवश्यक है। संचार माध्यमों के विना किसी भी संगठन की कोई दिशा तय नहीं हो सकती है। संगठन को फर्श से अर्श तक पहुँचने में संचार माध्यमों की भूमिका महत्त्वपूर्ण होती है।

इसी परिप्रेक्ष्य में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ भी एक सामाजिक संगठन है, जिसकी स्थापना डॉक्टर केशव बलिराम हेडगेवार द्वारा विजयदशमी के दिन 1925 में नागपुर में किया गया। संघ के बारे में जानने की उत्सुकता सामाज में लगातार बढती जा रही है। संघ का राष्ट्र हित में योगदान दिन-प्रतिदिन बढ़ता ही जा रहा है, जिसके परिणाम स्वरुप संघ के बारे में कुछ लोगों द्वारा कई बार आरोप भी लगाए गये हैं। इसके बावजूद भी संघ का समाज में प्रभाव बढ़ता ही जा रहा है। 'राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का दृष्टिकोण' पुस्तक के अनुसार 50,000 से भी अधिक शाखाओं के माध्यम से सामाजिक कार्य चल रहे हैं। संघ के एक लाख से अधिक

स्वयंसेवकों द्वारा अपेक्षा, उपहास, विरोध, अवरोध को नकारते हुऐ संघ के कार्य को लगातार आगे बढ़ाया जा रहा है। संघ के कार्य को सरलता एवं सुलभता के साथ आगे बढ़ाने के लिए स्वयंसेवकों द्वारा कई संगठनों का जन्म हुआ, जो अपने-अपने क्षेत्र में राष्ट्रहित में कार्य कर रहे हैं। आज संघ के विचारों से मिलते-जुलते कई संगठन है, जो इस प्रकार हैं-

(1) अधिवक्ता परिषद - न्याय के क्षेत्र में

(2) आरोग्य भारती-स्वास्थ्य के क्षेत्र में

(3) कुटुंब प्रबोधन - पारिवारिक संस्कार एवं समन्वय के क्षेत्र में

(4) कुष्ठ रोगी निवारण समिति - कुष्ठ रोगियों के हित में

(5) क्रीड़ा भारती - खेल जगत के क्षेत्र में

(6) गौ संवर्धन - गौ रक्षण एवं संवर्धन के क्षेत्र में

(7) ग्राम विकास - समग्र ग्राम विकास के क्षेत्र में

(8) ग्राहक पंचायत - ग्राहकों के हित में

(9) दीनदयाल शोध संस्थान - सर्वांगीण ग्राम विकास के क्षेत्र में

(10) नेशनल मेडिकोज आर्गनाइजेशन - डॉक्टर्स के हित में

(11) पूर्व सैनिक परिषद - पूर्व सैनिकों के हित में

(12) प्रज्ञा प्रवाह - बौद्धिक क्षेत्र में

(13) बाल गोकुलम - बालक-बालिका विकास के क्षेत्र में

(14) भारत विकास परिषद - सेवा के क्षेत्र में

(15) भारतीय इतिहास संकलन योजना -इतिहास धरोहर को बचाने के क्षेत्र में

(16) भारतीय किसान संघ - किसान, कृषि के क्षेत्र में

(17) भारतीय जनता पार्टी – राजनीतिक क्षेत्र में

(18) भारतीय मजदूर संघ - मजदूरों के हित में

(19) भारतीय शिक्षण मंडल - शिक्षण के क्षेत्र में

(20) राष्ट्र सेविका समिति - महिलाओं के कल्याण के क्षेत्र में

(21) राष्ट्रीय शैक्षिक महासंघ – शिक्षकों के कल्याण के क्षेत्र में

(22) राष्ट्रीय सिक्ख संगत - धार्मिक समन्वय के हित मे

(23) लघु उद्योग भारती - लघु उद्योग के हित में

(24) सहकारी भारती - सहकारी क्षेत्र में

(25) सामाजिक समरसता - सामाजिक समन्वय के क्षेत्र में

(26) साहित्य परिषद - साहित्यिक क्षेत्र में

(27) सेवा भारती - सेवा के क्षेत्र में

(28) संस्कार भारती - कला, कलाकार के हित में

(29) सीमा जनकल्याण समिति- समावर्ती, जन विकास के क्षेत्र में

(30) संस्कृत भारती - संस्कृत प्रसार के क्षेत्र में

(31) स्वदेशी जागरण मंच - विकास एवं आर्थिक क्षेत्र में

(32) वनवासी कल्याण आश्रम - जनजाति विकास के क्षेत्र में

(33) विद्या भारती - शिक्षा के क्षेत्र में

(34) अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद - छात्र कल्याण हेतु

(35) विश्व हिंदू परिषद - धार्मिक कल्याण हेतु

(36) विज्ञान भारती - विज्ञान, वैज्ञानिक क्षेत्र में

(37) विश्व विभाग-संघ के कार्यों को विश्व स्तर पर विस्तार के क्षेत्र में

इस प्रकार से संघ का उद्देश्य राष्ट्रहित में कार्य करना है। आज राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ विश्व का सबसे बड़ा गैर-सरकारी सामाजिक संगठन है। संघ के प्रथम सर संघचालक डॉ.

केशव बलिराम हेडगेवार, द्वितीय सर संघचालक श्री माधवराव सदाशिव गोलवरकर गुरू जी थे। तृतीय सर संघचालक श्री बालासाहब देवरस थे। चतुर्थ सर संचालक प्रो. राजेन्द्र सिंह उर्फ रज्जू भैया थे। पंचम सरसंचालक श्री कु. सी. सुदर्शन थे। वर्तमान में सरसंचालक श्री मोहन राव भागवत हैं। अखिल भारतीय प्रचार प्रमुख डॉ. मनमोहन जी वैद्य है। संघ के कई क्षेत्रों में कार्यों को सही दिशा में ले जाने के लिए कई लोगों को दायित्व दिया गया है। संघ में स्वयं की प्रेरणा से जुड़ने वाले लोग हैं। स्थापना के दौर से ही संघ की संचार प्रणाली काफी मजबूत मानी जाती है। इसी संदर्भ में इस शोध के माध्यम से संघ में बड़ी संख्या में लोगों के जुड़ने के वास्तविक कारणों का अध्ययन करना है। राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के प्रचार तंत्र और प्रभाव का अध्ययन कर हमें संचार प्रणाली को जानना है।

शोध समस्या

कई सामाजिक और धार्मिक संगठनों की मौजूदगी में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ने काफी कम समय में राष्ट्रहित में कार्यों का विस्तार किया ?

क्या राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ अपने संचार प्रणाली के द्वारा जाति-धर्म के रूढ़ियों को तोड़कर एक राष्ट्र बनाने में कामयाब हो रहा है?

साहित्य पुनरावलोकन

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के संचार प्रणाली का अध्ययन करने के लिए उनकी शाखा, प्रेस, कांफ्रेंसों, 2015 का प्रतिनिधि सभा, कई कार्यक्रमों का प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप से सहभागी हुए साथ ही समाचार चैनलों, समाचार पत्रों, रेडियो, सोशल मीडिया आदि माध्यमों से अवलोकन किया गया। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के स्वयंसेवकों द्वारा प्रकाशित समाचार पत्र पांचजन्य, आर्गेनाईजर, राष्ट्रधर्म, संघ प्रवाह का अध्ययन किया गया। संघ के लोकहित प्रकाशन से प्रकाशित संघ परिचय, संघ कार्य पद्धति, विचार विनिमय प्रकाशन द्वारा प्रकाशित पुस्तकों 'राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का दृष्टिकोण , राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का परिचय,' श्री भारती प्रकाशन से प्रकाशित पुस्तक 'संघ कार्य पद्धति का विकास' आदि का अध्ययन किया गया है तथा संघ द्वारा प्रकाशित ब्रोशर, पोस्टर, आत्मवृत्त, वार्षिकवृत्त आदि का भी अध्ययन किया गया है।

शोध का उदेश्य

(1) राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की संचार प्रणाली का अध्ययन करना।

(2) राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के भगवाध्वज और गणवेश के बारे में पता लगाना।

(3) राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ द्वारा कम पैसे में कैसे संचार कार्य किया जा रहा है, साथ ही पारदर्शिता के प्रति स्वयंसेवकों का रूझान जानना है।

उपकल्पना

(1) राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की संचार प्रणाली काफी विश्वसनीय एवं आक्रामक है।

(2) संघ स्वयंसेवकों से जुड़ने के लिए विशेष प्रकार के भगवाध्वज और गणवेश को अपनाया है।

(3) पारंपरिक तरीकों के साथ-साथ आधुनिक संचार माध्यमों के संयुक्त विधि से संचार का कार्य संघ करता है।

शोध की प्रासंगिकता

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की संचार रणनीति के अध्ययन के अंतर्गत इसकी शाखाओं, प्रतिनिधि सभा, कार्यक्रमों, उनके द्वारा प्रयोग किये जा रहे सोशल साइट्स, संचार के अन्य साधन जैसे- टेलीविजन, रेडियो, समाचार पत्र, पत्रिकाओं का अध्ययन किया गया। यह अपना प्रेस कॉफ्रेंस कब करती है, कहाँ करती है, स्थान एवं समय का चुनाव किस आधार पर किया जाता है? समाचार चैनलों के लाइव डिबेट में इस संगठन की तरफ से डिबेट में कौन हिस्सा लेता है। उसे हिस्सा लेने की अनुमति अपने संगठन से लेनी पड़ती है या डिबेट में हिस्सा लेने के लिए संगठन के तरफ से नियुक्त किया जाता है या संगठन के स्वयंसेवक को समाचार चैनल स्वयं बुलाते है या अपने संगठन के विचार प्रकट करने के लिए स्वयंसेवक खुद प्रस्ताव समाचार चैनलों को देते है? इन तथ्यों का अध्ययन एवं जांच-पड़ताल अनिवार्य है। स्वयंसेवी संगठन अधिकतम लक्षित समूह तक संदेश पहुंचाने के लिए किस तरह के प्रयास करते हैं? विरोधी संगठनों के नेताओं के बयान पर नेता किस तरह से प्रतिक्रिया देते हैं? इस अध्ययन से

यह बात सामने आयेगी कि इतने विशाल जनसंख्या वाले भारत में स्वयंसेवी संगठन अपनी पहुँच कैसे बनाते है? यहाँ राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के विशेष संदर्भ में अध्ययन किया जाएगा। चूंकि राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की स्थापना ऐसे समय में हुआ है जब सूचना एवं संचार के क्षेत्र में बहुत विकास नहीं हुआ था। संचार रणनीति के सफलतम उपयोग से सामाजिक माहौल को अपने अनुकुल बनाया जा सकता है। सोशल मीडिया पर राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के प्रचार प्रमुख डॉ. मनमोहन जी वैद्य आए दिन तत्कालीन मुद्दों पर अपने विचार लिखते रहते हैं और उनके ज्यादातर लेखों पर बड़ी संख्या में लोगों की प्रतिक्रिया आती है। अन्य संगठनों के नेता भी सोशल मीडिया पर लिखते हैं और उनकी चर्चा होती है, किंतु राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ एक सामाजिक संगठन है। अपने मजबूत संचार रणनीति के दम पर चर्चा का विषय बना रहता है। अत: अन्य संगठनों के साथ इस संगठन के विशेष संदर्भ में अध्ययन करने से सामाजिक संगठन के संचार रणनीति का महत्त्व सामने आया है।

शोध प्रविधि

(1) अवलोकन

(2) अंतर्वस्तु विश्लेषण

(3) सर्वेक्षण

(4) साक्षात्कार

शोध उपकरण

(1) प्रश्नावली

(2) अनुसूची

निष्कर्ष

- राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की संचार प्रणाली बहुत ही सशक्त और प्रभावशाली है।
- संघ की संचार प्रणाली के मजबूत आधार स्तभ स्वयंसेवक है।
- संघ की संचार प्रणाली आज भी व्यक्ति से व्यक्ति पर आधारित है।
- संघ के स्वयंसेवक आपस में संपर्क के लिए आधुनिक संचार के साधनों जैसे- मोबाईल, फेसबुक, ह्वाट्स् अप्प , ई-मेल आदि का प्रयोग करते हैं।
- संघ अपनी छवि निर्माण के लिए टेलीविजन, रेडियो, समाचार-पत्र, पत्रिकाओं के द्वारा सुनियोजित ढंग से अपने विचार प्रकट करता है।
- संघ के प्रतिनिधि टेलीविजन चैनलों में प्रतिदिन के डीबेट में अपनी बात बहुत ही मजबूती से रखते हैं और विरोधियों द्वारा संघ को बदनाम करने के इरादे से लगाए गए आरोपों का तथ्यों के साथ जवाब देते हैं, जो कि संघ की छवि निर्माण में बहुत ही मजबूत भूमिका निभाते हैं।
- संघ की पांचजन्य, ऑर्गेनाईजर, जैसी करीब 30 पत्रिकाएं, संघ के विचार को आमजन तक पहुंचाती हैं और पाठकों की प्रतिक्रिया को भी ये पत्रिकाएं प्रमुखता से स्थान देती हैं, अर्थात संघ दो तरफा संवाद के माध्यम से संचार करता है।
- संघ की अपनी एक वेबसाइट है, जिस पर संघ के इतिहास से लेकर वर्तमान तक की प्रमुख सूचनाएँ उपलब्ध हैं। जिस पर औसतन 2500 विजिटर्स प्रतिदिन विजिट करते हैं।
- संघ अधिकारिक रूप से अपना एक फेसबुक और ट्विटर एकाउंट भी चलाता है, जिससे उसके स्वयंसेवकों के साथ-साथ अन्य लोग भी जुड़े रहते हैं और उसके विचारों से सहमति और असहमति जताते हैं। फेसबुक पर 18,94,018 लाईक्स तथा ट्विटर पर 1,72,000 फोलोवर हैं।

- संघ को मजबूती से टिके रहने और निरंतर विस्तार दिलाने में इसके सहयोगी संगठन महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं और इन सहयोगी संगठनों की संचार प्रणाली भी संघ के विचारों को फैलाने में इसके लिए मददगार साबित होती हैं।
- संघ का समविचारी राजनीतिक संगठन भाजपा की वजह से संघ की खूब चर्चा होती है तथा साथ ही भाजपा के प्रतिनिधि संघ के बचाव में सदैव तत्पर रहते हैं। भाजपा कार्यकर्ताओं की हर गतिविधि पर विरोधी संघ की जिम्मेदारी मानते हैं और अनजाने में स्वत: ही इसके प्रचार-प्रसार में सहयोग देते हैं।
- आम लोगों से जुड़ने के लिए और उनसे संवाद के लिए संघ लोक माध्यमों का उपयोग भी अधिकांशतः करता है। शाखा में जुड़ने वाले युवा, संघ की प्रार्थना और संघ के गीत आदि के कारण भी इससे हृदय से जुड़ जाते हैं।
- दिन प्रतिदिन कंप्यूटर साक्षर हो रही जनता संघ से जुड़ने के लिए सोशल मीडिया को सबसे ज्यादा प्रभावी मानती है।
- आरोग्य भारती, कुष्ठरोगी निवारण समिति, सामाजिक समरसता जैसे सामाजिक संगठनों के सेवा कार्य जैसे छुआ छूत, उनमूलन आदि के कारण आम लोगों में संघ के प्रति सम्मान का भाव जाग्रत होता है और संघ की स्वीकार्यता स्वत: बढ़ जाती है। लाभार्थी स्वयं इसके समर्थन में संचार करते हैं।